International Journal of Applied Research 2017; 3(6): 1219-1221

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 1219-1221
www.allresearchjournal.com
Received: 23-04-2017
Accepted: 25-05-2017

डॉ० राम बालक राय
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय
हिन्दी–विभाग, ल.ना.मि.वि.,
दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० राम बालक राय
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय
हिन्दी–विभाग, ल.ना.मि.वि.,
दरभंगा, बिहार, भारत

बौद्ध–दर्शन में हीनयान और महायन का महत्त्व

डॉ० राम बालक राय

सारांशः
इतिहास की पृष्टभूमि पर धार्मिक और दार्शनिक दृष्टि से बौद्ध धर्म दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गया– हीनयान और महायान। हीनयान की उपलब्धि 'अर्हत्' पद की प्राप्ति है अर्थात् अष्टाङ्गिक मार्ग की साधना और घोर तप के माध्यम से बुद्धत्व की प्राप्ति की सम्भावना होती है, जो बहुत कम को उपलब्ध होता है। महायान का आदर्श बुद्धत्व अर्थात् बोधिसत्व की उपलब्धि है। श्रीलंका, वर्मा, थाईलैंड एवं चीन–प्रभृति देशों में अधिक प्रचलित एवं प्रचरित हीनयान है। जापान, एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र में महायान प्रचलित है। यान शब्द का अर्थ है– सवारी, घोड़गाड़ी, गमनागमन या अभियान। इस प्रकार महायान का अर्थ हुआ– वह बड़ी सवारी, जिस पर सवार होकर सब प्राणी निर्वाणतट तक पहुँच सकते है। इनकी अपेक्षा कम लोगों को निर्वाणतट तक पहुँचाने वाला हीनयान है।

प्रस्तावनाः
हीनयान का अपर नाम श्रावकयान भी कहा गया है। श्रावक वह है, जो विशिष्ट साधना से सम्पन्न होकर बुद्धत्व के मार्ग का अनुसरण करता है। इसके बाद प्रत्येक बुद्ध है, गुरु की सहायता से बोधि प्राप्त कर अन्त में बुद्ध होता है। अतः श्रावक से लेकर बुद्ध तक का मार्ग हीनयान का मार्ग है– 'श्रवको भूत्वा प्रत्येक बुद्धो बुद्धो भवति पुनश्च बुद्ध' [1] इति। महायान का दूसरा नाम बोधिसत्त्वयान या बुद्धयान है। यह ज्ञान की पूर्णावस्था है। आचार्य नागार्जुन के अनुसार बुद्ध का प्रथम उपदेश व्यक्त है। यह अर्हतों के लिए है। दूसरा उपदेश गुह्य है। यह बोधिसत्त्वों के लिए है। यह अधिक महत्त्वपूर्ण है। हीनयान में तथ्यता या शून्यता आदि का संकेतमात्र से उपदेश है। महायान में इसका विस्तृत विवेचन है।

बौद्धधर्म के अधिकतर आचार्यों का कहना है कि हीनयान लघु पन्थ है, जबकि महायान बृहत् पन्थ है। हीनयान के अनुसार 'अर्हत्' पद को प्राप्त करना सर्वोच्च आदर्श है। 'अर्हत्' व्यक्तिगत निर्वाण का प्रतीक है। अतः यह स्वार्थी, आदर्श है। महायान व्यष्टि नहीं, समष्टि का निर्वाण चाहता है। अतः यह परार्थी आदर्श है। कुछ आचार्यों के अनुसार बुद्धत्व तो समस्त मनुष्य में विद्यमान रहता है। परिस्थिति, परिवेश तथा समयानुसार सब बुद्ध हो सकते है। प्राणिमात्र के प्रति, करुणा, दया, सहिष्णुता, सहयोग, श्रद्धा और प्रेम से बोधिसत्त्व की अवस्था तक व्यक्ति पहुँच सकता है।

हीनयान बौद्धमत पुनर्जन्म की ओर संकेत करता है। यह स्वर्ग और नरक की कल्पना को सही मानता है। इनकी दृष्टि में बुद्ध लोकोत्तर महापुरुष है। हीनयान एक वर्णविहीन धर्म है, जो सिद्धान्त के रूप में ईश्वर का निराकरण करता है, किन्तु क्रियात्मक रूप में बुद्ध की पूजा की अनुज्ञा देता है। ऐसी कोई भी भक्ति नहीं है. जो जीवित ईश्वर की ओर संकेत करती हो। [2]

इसी प्रकार हीनयान सम्प्रदायानुगामी जन 'अर्हत्व' को व्यक्ति का परम आदर्श मानते हैं, किन्तु महायान सम्प्रदाय के लोग इसे मान्यता नहीं देते। उनकी दृष्टि में अर्हत्व से निर्वाण प्राप्त नहीं होते हैं। बोधिचर्यावतार में कहा गया है कि हीनयानियों का निर्वाण अरसिक है। [3] अर्हत् केवल अपने दुःख की निवृत्ति चाहता है। जबकि बोधिसत्व प्राणिमात्र के अपनयन के मार्ग ढूँढता है। प्राणियों को सुखी देखना ही उनकी मुक्ति है और निर्वाण भी। [4] इस सन्दर्भ में स्वामी विवेकानन्द का यह कथन भी खरा उतरता है– [5] Thus man find himself driven I study of the beyond- Life will be a desert] human life will be vain if we can not know the Keyond&The science and philosophy of religion by Swami Vivekanand.

'बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय' [6] का उद्घोष कर बुद्ध ने स्वयं प्रमाणित कर दिया कि हीनयान व्यष्टिपरक होने के कारण स्वार्थ से तथा महायान समष्टिपरक होने के कारण परार्थ की भावना से अभिभूत है। बोधिसत्व व्यक्तिगत निर्वाण प्राप्त करने के बाद भी उसे तब तक स्वीकार नहीं करते, जबतक कि विश्वकल्याण की दृष्टि से सभी प्राणी मुक्त नहीं हो जाते।

यह आत्ममुक्ति की अवहेलना परमुक्ति के लिए करता है। परमार्थ के लिए स्वार्थ का त्याग इनके जीवन का आदर्श है। इनका संकल्प है कि परिनिर्वाण में तब तक प्रवेश नहीं करूँगा, जबतक कि विश्व के अन्य प्राणी मुक्ति न प्राप्त कर लें। [7] महायान दीन–दुःखियों की सेवा को अपना धर्म मानता है, क्योंकि मनुष्य में सभी के प्रति प्रेम का जन्म भीतरी आनन्द का परिणाम है। अतः असली प्रश्न आनन्द की अनुभूति है। भीतर में आनन्द हो तो आत्मा की अनुभूति में सबके प्रति प्रेम उपजता है। वह व्यक्ति या सम्प्रदाय, जो स्वयं की आत्यन्तिक सत्ता से अपरिचित है, कभी भी आनन्द को उपलब्ध नहीं हो सकता है। स्वरूप–प्रतिष्ठा ही आनन्द है। अतः स्वयं को जानना वास्तविक धर्म या शुभ होने का मार्ग है। यही कारण है कि बोधिचर्यावतार में शान्तिदेव ने कहा है– अन्य प्राणियों की मुक्ति में जो आनन्द का सागर उमड़ता है, वह रसविहीन व्यक्तिगत मोक्ष में नहीं। [8] इसी सन्दर्भ में एक बार बोधिसत्व ने कहा था– मैं यात्रियों के लिए सार्थवाह बनूँगा, दास चाहने वालों के लिए दास बनूँगा, मैं अनाथों का नाथ बनूँगा–इत्यादि। [9]

महायान धर्म का एक विशेष सिद्धान्त है– त्रिकायवाद। यह सिद्धान्त महायानियों की एक विशिष्ट परिकल्पना है। इस कल्पना के अनुसार महात्मा बुद्ध की तीन काया हैं अर्थात् तीन शरीर है। यथा– (1) निर्माणकाय अर्थात् यह एक निर्मितक काया है, इसे रूपकाय भी कहा जाता है। लोकानुवर्तन के लिए बुद्ध ने इसे धारण किया था। बुद्ध का यह अयथार्थ शरीर है। (2) दूसरी देह है– धर्मकाय। यह एक आध्यात्मिक शरीर है, भौतिक नहीं। बुद्ध का यथार्थ शरीर धर्मकाय ही है। बुद्ध ने स्वयं कहा था– वक्कलि। मेरी इस गन्दी देह को देखने से तुम्हें क्या लाभ होगा? तुम देखना ही चाहते हो तो धर्म को देख, उसी में तुम्हें मैं दिखाई दूँगा। जो मुझे देखता है, वह धर्म को देखता और जो धर्म को देखता है, वह मुझे देख लेता है।

बुद्ध के आनन्दमय शरीर को सम्भोगकाय कहा गयी है। इसी शरीर से वे 'तुषितलोक' (स्वर्ग) में निवास करते हैं। ठीक इसके विपरीत हीनयानी बुद्ध को मरणधर्मा मनुष्य से भिन्न कुछ मानने को तैयार नहीं है। बुद्ध की भी एक समानधर्मा मनुष्य का तरह जन्म, जीवन, यौवन, विवाह, सन्तानोत्पादन–प्रभृति क्रियायें दर्शनीय है। फिर उन्होंने अपने सकल्प और साध्य को ऊँचा उठाकर उतनी ही गहराईयों तक अपनी प्रसुप्त शक्तियों को जगाकर अनवरत साधना से बुद्धत्व प्राप्त किया। हीनयानी उन्हें एक ऐतिहासिक महापुरुष मानते हैं।

महायान भक्तिप्रधान धर्म है और हीनयान अनीश्वरवादी धर्म है। महायान धर्म पर उपनिषद् और गीता का प्रभाव परिलक्षित होता है। महायान में भगवान् बुद्ध ने कहा है– मैं इस जगत् का पिता हूँ। [10] तुलना गीता से– 'पिताऽस्ति लोकस्य चराचरस्य'। [11] महायान में बुद्ध को जगदीश्वर माना गया है। इसमें पारमिता की मनोरम कल्पना और विशिष्ट अवधारणा हृदयस्पर्शी है। परमपिता का अर्थ पूर्णता है। इनकी संख्या छः है। हीनयान में दस पारमिताओं का वर्णन मिलता है। महायान में प्रज्ञापारमिता को सर्वाधिक प्रमुखता प्राप्त है, क्योंकि प्राप्त व्यक्ति को ही शून्यता अर्थात् सभी धर्मों की निःसारता का बोध है। इसी को दृष्टिशून्यता भी कहा जाता है। यह ज्ञेयावरण का क्षय है। हीनयान के क्लेशावरण क्षय की अपेक्षा यह अत्युत्कृष्ट है, क्योंकि उस प्रज्ञा को पहचानने की आँखे तो शून्य हैं। इन्हें ही समाधि कहा जाता है। यही योग है। यही पारमिता है। चित्त की वृत्तियों के विसर्जन से बन्द आँखें खुलती है। सारा जीवन इस शून्यतारूपी अमृत के प्रकाश से आलोकित और रूपान्तरित हो जाता है।

शून्य से पूर्ण के दर्शन होते हैं और शून्य आता है। विचारप्रक्रिया के तटस्थ चुनावरहित साक्षिभाव से विचार में किसी शुभाशुभ का निर्णय नहीं करना पड़ता है। यह निर्णय राग–विराग उत्पन्न करता है। किसी को रोर रखना या किसी का परित्याग करने का विचार इसी से उत्पन्न होता है। यह भाव ही विचार–बन्धन है। इसके तटस्थ साक्षीभाव का अर्थ है– निर्भाव। किसी भी विचार को निर्भाव के बिन्दु से देखना ध्यान है।

पुनः त्रिविध यान पर चिन्तन है– श्रावकयान, प्रत्येक बुद्धयान और बोधिसत्त्वयान। ये तीनों निर्वाण–प्राप्ति के ही प्रशस्त पथ हैं। इनके अतिरिक्त महायान में दश भूमि की अवधारणा है। हीनयान सम्प्रदाय में केवल चार भूमियों की परिकल्पना की गई है। मुख्यतः दार्शनिक दृष्टि से हीनयान की देन है– अनित्यवाद, अनात्मवाद और अनीश्वरवाद। दृश्य जगत् की सारी वस्तुएँ क्षणिक, विनाशी और परिणामी हैं। विश्व में जहाँ भी सत्ता है, वहाँ परिवर्तन या परिणाम है। कोई भी वस्तु नित्य या शाश्वत नहीं, सब एक भ्रम है। महायान की देन है– विज्ञानवाद और शून्यवाद। वस्तुतः हीनयान और महायान– दोनों एक ही वृन्त के दो फूल हैं। दो रूप में प्रतीत होने वाले ये दो सम्प्रदाय बौद्ध धर्म के दो विभाजन हैं, दो वर्ग हैं। एकान्तिक भेद नहीं है। बौद्ध धर्म की प्रारम्भिक अवस्था की देन हीनयान है और उसकी विकसित अवस्था की देन महायान है। बुद्धवचन ही दोनों का मूल है। हीनयान बीज है और महायान उसका वृक्ष। विकासक्रम, स्वरभेद और सोपानक्रम की भिन्नता स्पष्टतः प्रतीत होती है। अन्यथा दोनों की चिन्तनधारा और प्राणधारा एक साथ एक– जैसी ही प्रवाहित है।

इस सन्दर्भ में प्रसिद्ध चीनी यात्री इत्सिंग का कहना है कि जो लोग बोधिसत्त्वों की पूजा करते है और महापानसत्रों का अध्ययन करते हैं, वे महायानी कहलाते हैं और जो कर्म नहीं करते. वे हीनयानी कहलाते हैं। [12] इनमें हीनयान से सम्बद्ध योगाचार और माध्यमिक दो दार्शनिक सम्प्रदाय विकसित हुए। तदनुसार सर्वप्रथम– वैभाषिक को सर्वास्तिवाद भी कहते हैं। यह बाह्य जगत् की सत्ता को स्वीकार तो करता है परन्तु उसे प्रत्यक्ष और क्षणभङ्गूर मानता है। सौत्रान्तिक बाह्य जगत् की सत्ता को तो स्वीकार करते हैं, किन्तु प्रत्यक्ष के द्वारा उसे ज्ञेय नहीं मानते, अपितु अनुमान के द्वारा ज्ञेय मानते हैं। क्षणभंगूरवाद को यह स्वीकार करता है। योगाचारमत बाह्य जगत् की सत्ता को स्वीकार नहीं करते। यह समस्त व को विवर्त या विज्ञानरूप मानता है। अतः इसे विज्ञानवाद भी कहते हैं। माध्यमिकमत को शून्यवाद कहते हैं। तदनुसार समस्त वस्तु शून्य है। वह शून्य को परम तत्त्व मानता है। स्थूल से सूक्ष्म तत्त्व की ओर बढ़ने पर ये चार ही श्रेणियाँ हो सकती है। इन मतों के सिद्धान्तों का एकत्र वर्णन इस प्रकार है– [13]

'मुख्यो माध्यमिको विवर्तमखिलं शून्यस्य मेने जगत्,
योगाचारमते तु सन्ति मतयस्तासां विवर्तोऽखिलः।
अर्थोऽस्ति क्षणिकस्त्वसावनुमितो बुद्धयेति सौत्रान्तिकः,
प्रत्यक्षं क्षणभङ्गुरं च सकलं वैभाषिको भासते।।'

निष्कर्ष–

हीनयान रूढ़िवादी होते हैं। हीनयानी परिवर्तन का घोर विरोधी है। वह मूल बौद्ध मत की अधिकांश बातों को बिना परिवर्तन के स्वीकार करता है। परन्तु महायान इसके विपरीत उदार एवं प्रगतिशील है। उदार होने के कारण उसमें अनेकानेक नये विचार मिल गये। प्रगतिशील होने के कारण उसमें अश्वघोष, नागार्जुन, अंसग, रमाकान्त पाठक आदि विद्वानों के विचार समाहित हैं। जिन्होंने गम्भीरता पूर्वक दर्शन के भिन्न–भिन्न प्रश्नों व अंगो पर विचार किया है।

सन्दर्भ–

1. सूत्रालङ्कार, पृ.– 42
2. भारतीय दर्शन, पृ.– 178
3. बोधिचर्यावतार– 8.108
4. ताका कुसु, पृ.– 256
5. टमकंदजं चीपसवेवचीलए चंहम. 119

6. योगाचार– पृ.– 69
7. लंकावतार– 66.6
8. बोधिचर्यावतार– 8.108
9. बोधिचर्यावतार– 8.108
10. सद्धर्मपुण्डरीक, पृ.– 156
11. गीता– 11.43
12. योगाचार– 187
13. बौद्ध दर्शन–मीमांसा, पृ.– 216